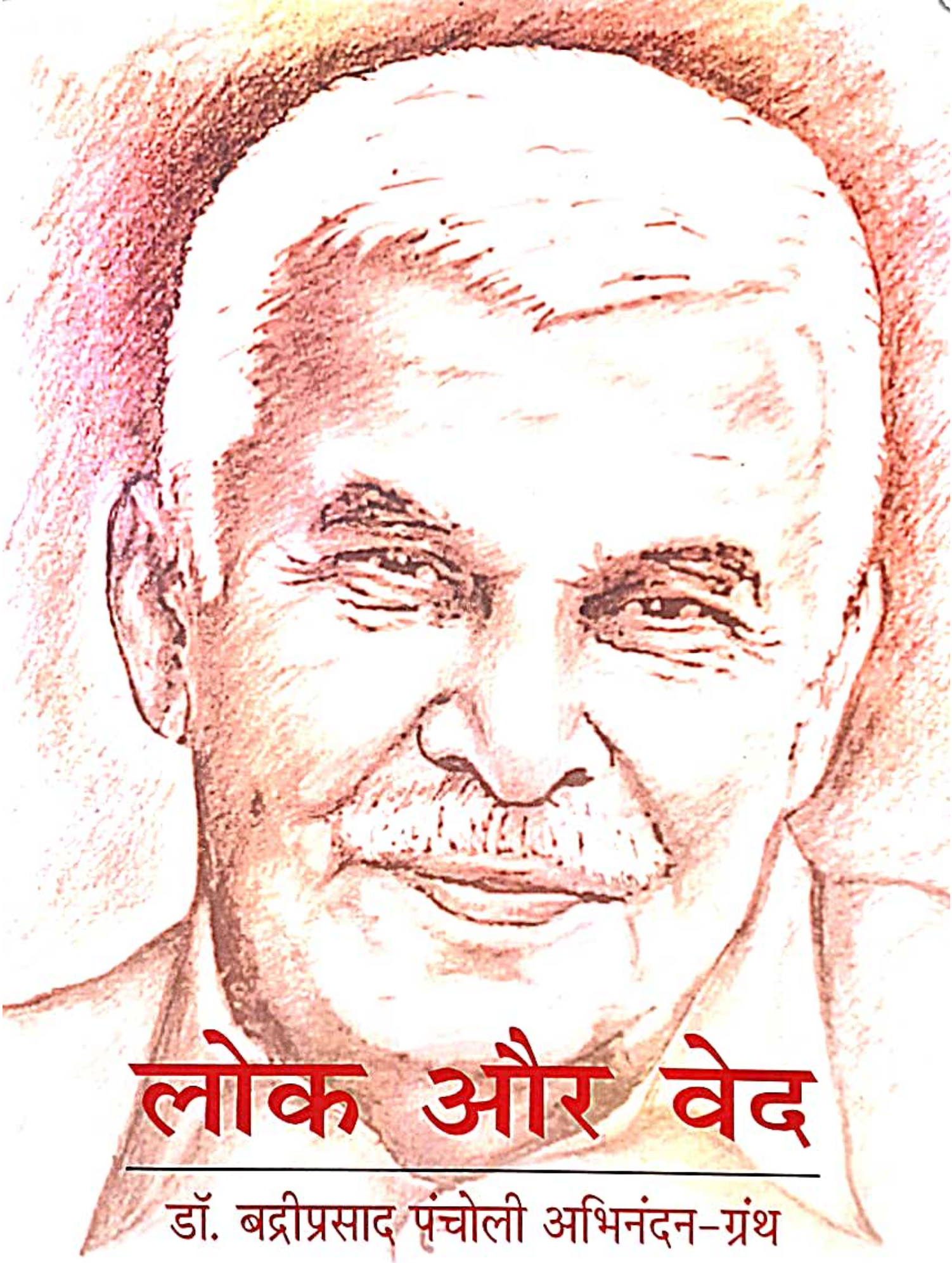

लोक और वेद

डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली अभिनंदन-ग्रंथ

प्रधान संपादक

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड
4697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002
फोन : 011-23281655, 011-43708938
E-mail: anamikapublishers@yahoo.co.in

प्रथम संस्करण : 2019

© संपादकद्वय

आई.एस.बी.एन. 978-81-7975-943-1

कवर पृष्ठ चित्रांकन : हरिशेखर शर्मा, नोहर (राजस्थान)

118. मेरे जीवन की अमूल्य निधि	*नेहरू पंडित (ऋषि)*	298
119. ऐसे गुरु हर किसी को मिले	*डॉ. जयदेव*	300

कविता : सुरों ने ताज सजाया है

120. 'वंदे मारतम्' वाले गुरुवर	*डॉ. विद्या सागर शर्मा*	303
121. गुरुओं के सिरमौर	*वली उल्लाह खाँ फ़रोग़*	305
122. साहित्य-जगत के पारखी	*गायत्री शर्मा*	306
123. नमन अनंत महाविभूति को	*डॉ. कुंजबिहारी पांडेय*	307
124. उज्ज्वल छवि	*डॉ. प्रतिभा शुक्ला*	308
125. पूजनीय परम	*संदीप पांडे*	309
126. शब्द-कुसुम	*हरिओम शर्मा 'अमित'*	310
127. तेरी दरियादिली	*डॉ. डी.एन. सती 'शांडिल्य'*	313
128. साहित्याकाश के ध्रुव	*डॉ. नगेंद्र सिंह 'आनंद'*	314
129. पंचोली गुणवंत	*नाथूलाल महावर 'मधुरम'*	315
130. दिनकर से भी अधिक प्रखर हो	*अनिल कुमार*	316
131. साहित्य-रत्न	*डॉ. सरोज मालपानी*	317
132. अविचल पथिक	*सुधीर सोनी*	319
133. जीवन की कमाई	*डॉ. आरती शर्मा*	320
134. जीवन मंगलमय हो आपका	*आशुतोष औदिच्य*	321
135. लोहे को पारस दर्शन	*हरि 'शेखर' शर्मा*	322

समीक्षा : लेखनी की कसौटी पर

136. *जीवन-दीप्ति* के जीवन साधक	*प्रो. रामवीर*	327
137. आदर्श जीवन का मूलमंत्र : *जीवन शतपथ*	*डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह*	330
138. कर्म के प्रति प्रेरणा : *अमृत धुले हाथ*	*डॉ. शमा खान*	340
139. शाश्वत मंगल-साधिका : *श्रुति मंगला*	*डॉ. ओमप्रकाश पारीक*	342
140. मानव समाज का आत्मचिंतन बोध : *वेद की मानवता को देन*	*डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति*	346
141. राष्ट्रीय उत्सर्ग की अनुगूंज : *नींव के स्वर*	*डॉ. सीता शर्मा 'शीताभ'*	348
142. जीवनोत्सव की प्रेरक कृति : *जागो देव! देश में मेरे*	*इंदु वर्मा*	355
143. सार्थक काव्य : *इतिहास का आत्मनिवेदन*	*डॉ. ममता खांडल*	361
144. युगबोध का दस्तावेज : *कथार्चन*	*डॉ. पूनम पांडे*	367
145. शब्द चिंतन का संसार : *शब्द लोक*	*डॉ. धर्मपाल यादव*	369

मानव समाज का आत्मचिंतन बोध

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

वेद हमारी बुद्धि, हमारे अहम और हमारी मेधा को बहुआयामी बनाते हैं। वेदों में निहित ज्ञान के अनुसरण और उसकी जनकल्याकारी मीमांसा को आत्मसात् करने के कारण ही हम भारतीय विश्व को प्रकाशित करने का द्वंद रखते हैं। वेदों में निहित अक्षर और शब्द उस ईश्वरीय अभिव्यक्ति का संकलन हैं जिससे मानव मात्र देव तुल्य प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। रचनाकार डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली द्वारा रचित *वेदार्थबोधक* निबंध संकलन, जिसे हम *जीवन सृष्टि और जीवन दृष्टि* के नाम से जानते हैं, को पढ़कर हम वेद की सारगर्भित अमृतमयी वाणी का रसास्वादन सहज ही कर सकते हैं। आपकी लेखनी ने इस संकलन के माध्यम से 'सत्यं ज्ञानमन्तं ब्रह्म' को मानवीय सीमाओं के अंदर ही सहज आत्मोद्धार के लिए अवतरित किया है। जहाँ एक ओर अर्चना के वेद *ऋग्वेद* से लौकिक संस्कृति को अभिव्यक्त किया है, वहीं यास्क के निरुक्त की आत्मशक्ति के अनुरूप वेद शास्त्र के दर्शन कराए हैं। आपका वैदिक चिंतन का वैभव इस तथ्य को उजागर करता है कि वेद सृष्टि का चैतन्य है और ब्रह्म या विकास का विधान करता है। आपके तृतीय निबंध अथर्ववेदीय विज्ञान दृष्टि से ईश्वर और मनुष्यता का एकात्मबोध पैदा होता है और इस प्रतिष्ठा के अनुरूप विज्ञान अपने वास्तविक उद्देश्य को प्रगट करता है जिसमें मानव जीवन के चार सूत्र जजेम, जयेम, यजेम एवं भजेम को विचार दर्शन से कर्म और व्यवहार की श्रेष्ठता को स्थापित किया है। आपने न केवल वेदों से परिचय कराया है वरन् समाज विज्ञान का सारा चिंतन, प्राकृतिक विज्ञान का सारा अध्ययन वेद माता रूपी मूल स्रोत में व्यक्त किया है। आपने वेदों की सूक्ष्मतम सूक्तियों से आदर्श कर्म और सत्य के मार्ग का अनुसरण करने का महामंत्र खोज निकाला है। आपका वाक्य विन्यास क्लिष्ट वेदों को भी जन साधारण की वाणी बनाने में सक्षम है। आपने वेद के आदेशों, कामनाओं, चरित्रों और संज्ञाओं को जीवन के आदर्शों में पिरोया है। आपके वैदिक अर्थ जहाँ मानव को इंद्रिय नियंत्रण का ज्ञान देते हैं, वही भारतीय जीवन मूल्यों के साथ जन-जन को एक विचार-सूत्र में बाँधते हैं। हमारे रेखागणित, हमारा ज्योतिष और गणितीय संक्रियाएँ आडंबर नहीं अपितु वैश्विक काल विधान की परिचायक हैं जो न सिर्फ वेदों की देन हैं अपितु सनातन जीवन यज्ञ की वैज्ञानिक कल्पना का आधार है।

आपका निबंध संकलन अद्वितीय आत्मबोध का द्योतक है। जो हमारी अन्वेषण मेधा को कंपायमान करता है।